Roll No. .....
Signature of Invigilator .....

Paper Code
BA-412

पतंजलि विश्वविद्यालय

University of Patanjali

Examination May–June-2023

B.A. (with Yoga Science), Semester-IV
Sanskrit ; Paper : Second

साहित्यं धर्मशास्त्रं च

Time: 3 Hours **Max. Marks: 70**

नोट : यह प्रश्नपत्र सत्तर (70) अंकों का है जो दो (02) खंडों क, तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड–क
(दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पांच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पंद्रह अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(3×15=45)**

1. मुण्डकोपनिषद् में वर्णित ब्रह्मविद्या का क्रम सश्लोक बतायें तथा परा व अपरा विद्या को स्पष्ट करें।
2. रघुवंश महाकाव्य के द्वितीय सर्ग का सश्लोक सार लिखें।
3. नीतिशतकम् से कोई **तीन श्लोक** लिखकर उनकी सप्रसंग व्याख्या करें।
4. निम्न महापुरुषों के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डालें –
   (क) आचार्यः पाणिनिः (ख) आचार्यः पतञ्जलिः। (ग) आचार्यः महाकविः कालिदासः।
5. श्लोकपूर्ति कर व्याख्या करें– (क) क्षान्तिश्चेत् कवचेन किं ..... (ख) प्रारभ्यते न खलु .....।

खण्ड–ख
(लघु–उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में सात (07) लघु उत्तरीय प्रश्न दिए गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पांच अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **पांच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(5×5=25)**

6. अदृश्य, अग्राह्य आदि गुणो से युक्त ईश्वर (ब्रह्म) के स्वरूप का वर्णन करें।
7. श्लोक व्याख्या करणीया – नायमात्मा प्रवेचनेन लभ्यो, न मेधया न बहुना श्रुतेन।
   यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः, तस्यैष आत्मा विवृणुते तनुं स्वाम्।।
8. महाराजा दिलीप के द्वारा कृत गौ सेवा के विषय में विस्तार से प्रकाश डालें।
9. महाराजा/आचार्य भर्तृहरि जी के जीवन पर प्रकाश डालें।
10. **अर्थ करें** – केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं, हारा न चन्द्रोज्ज्वला,
    न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्धजाः।
    वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते,
    क्षीयन्ते खलु भूषणानि, सततं वाग्भूषणं भूषणम्।।

11. हठी/मूर्ख व्यक्ति को समझाना अत्यन्त कठिन है, इस आशय को एक श्लोक के साथ समझायें।
12. **अर्थः करणीयः** – द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया, समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
    तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्–नन्यो अभिचाकशीति।।

----------x----------